अध्याय 32

यरदन के पूर्व के गोत्र

इसका ब्यौरा देने में कि यरदन के पूर्व की ओर 2½ गोत्र, सीहोन और ओग से पहले जीत लिए गए क्षेत्र में (32:33; देखें 21:21-35) कैसे बसे, गिनती 32 इस्राएल के वाचा के देश में प्रवेश करने की तैयारियों पर बल को बनाए रखती है। यरदन के पूर्व का क्षेत्र "ट्रांसजोर्डन" कहलाता है, जिसका अर्थ होता है "जोर्डन/यरदन के पार।" रूबेन और गाद के गोत्रों ने भूमि को प्राप्त कर लेने की ओर कदम बढ़ाया मूसा से इस क्षेत्र, जिसे पहले ही जीत लिया गया था, में बस जाने की अनुमति लेने के द्वारा। वह गाए-बैल और भेड़-बकरियां रखने के लिए अच्छा क्षेत्र था और उनके पास बड़े झुण्ड और रेवड़ थे।

मूसा पहले इन गोत्रों से क्रोधित हुआ क्योंकि उसने उनके इस निवेदन को वाचा के देश में प्रवेश करने से इनकार करना समझा। उसे लगा कि वे वही कार्य फिर से करने जा रहे थे जो टोह लेने जाने वालों ने, चालीस वर्ष पहले किया था, देश के विषय एक बुरे विवरण के द्वारा उस देश को जीत लेने से अन्य गोत्रों को निराश कर दिया था। मूसा को चिंता थी कि यदि वे दो गोत्र भी वही करेंगे जिसकी वे योजना बना रहे थे, तो इस्राएली पूर्णतः नाश हो जाएँगे (32:15)।

किन्तु इन गोत्रों ने मूसा को आश्वस्त किया कि उनके कोई बुरे उद्देश्य नहीं थे। उनका प्रस्ताव था कि वे अपने परिवारों को बसा देंगे, परन्तु उनके युद्ध करने योग्य पुरुष शेष इस्राएल के साथ यरदन पार करेंगे और भूमि को जीतने में सहायता करेंगे। जब भूमि वश में हो जाएगी तो वे लौट कर अपने परिवारों के पास आ जाएँगे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सहमति बन गई, और दो गोत्रों को यरदन के पूर्व की भूमि आवंटित कर दी गई।

इस अध्याय का अंतिम भाग बताता है कि मनश्शे के आधे गोत्र ने भी रूबेन और गाद के साथ सम्मिलित होना चाहा। अध्याय का अन्त इनमें से प्रत्येक गोत्र के बसने के इलाके के कुछ विवरण के साथ होता है (32:33-42)।

आरंभिक प्रस्ताव (32:1-5)

[1]रूबेनियों और गादियों के पास बहुत से जानवर थे। जब उन्होंने याजेर और गिलाद देशों को देखकर विचार किया, कि वह पशुओं के योग्य देश है, [2]तब मूसा और एलीआज़ार याजक और मण्डली के प्रधानों के पास जाकर कहने लगे, [3]"अतारोत, दीबोन, याजेर, निम्रा, हेशबोन, एलाले, सबाम, नबो, और बोन नगरों

का देश 4जिस पर यहोवा ने इस्राएल की मण्डली को विजय दिलवाई है, वह पशुओं के योग्य है; और तेरे दासों के पास पशु हैं।" 5फिर उन्होंने कहा, "यदि तेरा अनुग्रह तेरे दासों पर हो, तो यह देश तेरे दासों को मिले कि उनकी निज भूमि हो; हमें यरदन पार न ले चल।"

आयतें 1-4. रूबेन और **गाद** के गोत्र यरदन के पूर्व की ओर स्थित उस भूमि की ओर आकर्षित हुए **जिस पर यहोवा ने इस्राएल की मण्डली को विजय दिलवाई** - जिस भूमि पर, सीहोन और ओग (अध्याय 21), तथा, अभी और निकट समय में, मिद्यानियों (अध्याय 31) पर प्राप्त विजय के कारण, इस्राएल अभी कब्ज़ा किए हुए था। इन गोत्रों **के पास बहुत से जानवर थे** और उन्होंने देखा कि वह भूमि पशुओं को रखने और बढ़ाने के लिए योग्य है। यरदन के पूर्व के कुछ स्थान **याजेर** और **गिलाद** भी कहलाते थे। "याजेर" उस भूमि के लिए है जो याजेर नगर के चारों ओर थी (21:32); "गिलाद" भिन्न क्षेत्रों के लिए हो सकता है, ट्रांसजोर्डन के सारे इलाके सहित। यहाँ इसका तात्पर्य "जबोक [नदी] के दक्षिण में स्थित पहाड़ी क्षेत्र से है।"[1] इसकी पुष्टि इस तथ्य से होती है कि जितने नगरों का उल्लेख यहाँ किया गया है वे सब अर्नोन के उत्तर और जबोक के दक्षिण में स्थित थे: **अतारोत, दीबोन, याजेर, निम्रा, हेशबोन, एलाले, सबाम, नबो, और बोन।**[2]

रूबेनियों और गादियों ने **मूसा, एलिआज़र**, और **मण्डली के अन्य प्रधानों** के पास जाकर कहा कि वे उन्हें वहीं रहने की अनुमति प्रदान करें, अन्य गोत्रों के साथ यरदन पार करने के स्थान पर। उन्होंने अपनी योजना के लिए मूसा से अनुमोदन चाहा क्योंकि वाचा का देश, मूल रूप में, यरदन के पश्चिम में स्थित था (देखें अध्याय 34)। क्या हमें इन गोत्रों पर परोक्ष उद्देश्य रखने का दोषी समझें और यह मानें कि उनके उद्देश्य गलत थे? संभवतः नहीं, क्योंकि लेख में ऐसा कोई पुष्टीकरण नहीं है जो उनके द्वारा कथित उद्देश्यों से किसी भिन्न उद्देश्य के रखने का सुझाव दे: उन्होंने स्पष्ट किया कि जिसे क्षेत्र को वे चाहते थे **वह पशुओं के योग्य है;** तथा उन्होंने कहा **"तेरे दासों के पास पशु हैं।"**

आयत 5. उन्हें इसका श्रेय जाता है कि वे इस्राएल के अगुवों के पास आदर सहित गए। यदि उनके मनों में बलवा करना होता, तो अपने अगुवों के पास एक नम्र निवेदन लेकर जाने के स्थान पर, वे विद्रोह कर सकते थे, इस्राएल के साथ अपने संबंध विच्छेद कर सकते थे, और जो भी भूमि उन्हें चाहिए थी उसे हथिया सकते थे - यदि आवश्यक होता तो बलपूर्वक। परन्तु **उन्होंने कहा, "यदि तेरा अनुग्रह तेरे दासों पर हो, तो यह देश तेरे दासों को मिले कि उनकी निज भूमि हो; हमें यरदन पार न ले चल।"**

मूसा की प्रतिक्रिया (32:6-15)

6मूसा ने गादियों और रूबेनियों से कहा, "जब तुम्हारे भाई युद्ध करने को जाएँगे तब क्या तुम यहाँ बैठे रहोगे? 7और इस्राएलियों से भी उस पार के देश

जाने के विषय, जो यहोवा ने उन्हें दिया है, तुम क्यों अस्वीकार करवाते हो? 8जब मैं ने तुम्हारे बापदादों को कादेशबर्ने से कनान देश देखने के लिये भेजा, तब उन्होंने भी ऐसा ही किया था। 9अर्थात् जब उन्होंने एशकोल नामक घाटी तक पहुँचकर देश को देखा, तब इस्राएलियों से उस देश के विषय जो यहोवा ने उन्हें दिया था अस्वीकार करा दिया। 10इसलिये उस समय यहोवा ने कोप करके यह शपथ खाई, 11'निःसन्देह जो मनुष्य मिस्र से निकल आए हैं उनमें से, जितने बीस वर्ष के या उससे अधिक आयु के हैं, वे उस देश को देखने न पाएँगे, जिसके देने की शपथ मैं ने अब्राहम, इसहाक, और याकूब से खाई है, क्योंकि वे मेरे पीछे पूरी रीति से नहीं हो लिये; 12परन्तु यपुन्ने कनजी का पुत्र कालेब, और नून का पुत्र यहोशू, ये दोनों जो मेरे पीछे पूरी रीति से हो लिये हैं ये उसे देखने पाएँगे।' 13अत: यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़का, और जब तक उस पीढ़ी के सब लोगों का अन्त न हुआ, जिन्होंने यहोवा के प्रति बुरा किया था, तब तक अर्थात् चालीस वर्ष तक वह उन्हें जंगल में मारे मारे फिराता रहा। 14और सुनो, तुम लोग उन पापियों के बच्चे होकर इसी लिये अपने बाप-दादों के स्थान पर प्रकट हुए हो, कि इस्राएल के विरुद्ध यहोवा के भड़के हुए कोप को और भी भड़काओ! 15यदि तुम उसके पीछे चलने से फिर जाओ, तो वह फिर हम सभों को जंगल में छोड़ देगा; इस प्रकार तुम इन सारे लोगों का नाश कराओगे।"

आयतें 6, 7. मूसा ने तीखी प्रतिक्रिया दी, उसने उन गोत्रों पर दो गलतियाँ करने का दोष लगाया। पहला, उसने संकेत किया कि **गादियों और रूबेनियों** ने भाईचारे की प्रीति के न होने को दिखाया है, अन्य गोत्रों को **उस पार के देश जाने के विषय अस्वीकार करवाने** के द्वारा। उसने पूछा, **"जब तुम्हारे भाई युद्ध करने को जाएँगे तब क्या तुम यहाँ बैठे रहोगे?"** प्रत्यक्ष है कि उसने इन गोत्रों के निवेदन को युद्ध से बचने के प्रयास समझा था।

आयतें 8, 9. दूसरा, उसने कहा कि वे उसी गलती को दोहरा रहे थे जो उनके **बापदादों** ने चालीस वर्ष पहले की थी। मूसा ने उस पिछली पीढ़ी पर आई दण्ड की आज्ञा की दुखद कहानी को जैसे कि वह अध्याय 13 और 14 में पाई जाती है, दोहराया। टोह लेने वालों को **कादेशबर्ने**[3] से **देश देखने के लिये भेजा** गया था। उनके **एशकोल नामक घाटी** से लौटने के पश्चात (13:23, 24), उन्होंने **इस्राएलियों से उस देश के विषय अस्वीकार करा दिया**। उनके नकारात्मक विवरण के कारण, इस्राएलियों ने वाचा के देश में प्रवेश करने से इनकार कर दिया।

आयतें 10-12. परमेश्वर ने **कोप करके** लोगों पर अपना न्याय सुनाया, कि **मिस्र** से निकलकर आने वाले लोगों में से **जितने** भी वयस्क हैं वे उस **देश** में प्रवेश नहीं करने पाएँगे, जिसकी शपथ उसने पितरों से की थी - कोई नहीं से अभिप्राय था **यहोशू** और **कालेब** के **अतिरिक्त**, क्योंकि वे ही थे जो **मेरे पीछे पूरी रीति से हो लिये** थे (14:22-24, 28-30)।

आयत 13. मूसा ने कहा **अतः यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़का**, और वह उन्हें **वह उन्हें जंगल में मारे मारे फिराता रहा**। इसके बाद के **चालीस वर्षों** में

उस सारी पीढ़ी के सब लोगों **का अन्त हो गया** क्योंकि उन्होंने **यहोवा के प्रति बुरा किया था** (14:32-35)।

आयत 14. मूसा का निष्कर्ष था कि रूबेनी और गादी उसी गलती को दोहरा रहे थे। उसने समझा कि वे अपने बाप-दादों के समान **पापियों के बच्चे** थे, और उसे भय हुआ कि वे परमेश्वर को और भी अधिक कोपित करेंगे।

आयत 15. यदि वे अपनी योजना में बने रहते तो, मूसा का मानना था, वे शेष लोगों को भी निराश कर देंगे जिससे फिर समस्त मण्डली देश में प्रवेश करने से इनकार कर देगी। उसने चेतावनी दी, "**वह फिर हम सभों को जंगल में छोड़ देगा; इस प्रकार तुम इन सारे लोगों का नाश कराओगे।**"

जो यह जानते हैं कि इसके आगे क्या हुआ, पहले से ही निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए मूसा की आलोचना कर सकते हैं। परन्तु जिस प्रकार हमें रूबेनियों और गादियों पर परोक्ष उद्देश्य रखने का दोषी नहीं समझना चाहिए, उसी प्रकार हमें यह भी नहीं समझना चाहिए कि मूसा के मन में परमेश्वर के लोगों के लिए सर्वोत्तम करने के अतिरिक्त भी कुछ था। वास्तविकता में, यदि उन दोनों गोत्रों के निवेदन में अपने भाइयों के लिए युद्ध करने की सहमति सम्मिलित नहीं होती, तो उनके बस जाने के संभावित परिणाम बिलकुल वही होते जैसे मूसा ने वर्णन किए थे।

गोत्रों की स्वीकार्य योजना (32:16-32)

निवेदन का स्पष्टिकरण (32:16-19)

16तब उन्होंने मूसा के और निकट आकर कहा, "हम अपने पशुओं के लिये यहीं भेड़शाला बनाएँगे, और अपने बाल-बच्चों के लिये यहीं नगर बसाएँगे, 17परन्तु स्वयं इस्राएलियों के आगे आगे हथियार-बन्द तब तक चलेंगे, जब तक उनको उनके स्थान में न पहुँचा दें; परन्तु हमारे बाल-बच्चे इस देश के निवासियों के डर से गढ़वाले नगरों में रहेंगे। 18परन्तु जब तक इस्राएली अपने अपने भाग के अधिकारी न हों तब तक हम अपने घरों को न लौटेंगे। 19हम उनके साथ यरदन पार या कहीं आगे अपना भाग न लेंगे, क्योंकि हमारा भाग यरदन के इसी पार पूरब की ओर मिला है।"

आयत 16. रूबेनियों और गादियों ने मूसा के शब्दों का उत्तर **उसके** और निकट आकर दिया, और अपने प्रस्ताव की व्याख्या की। **और निकट आकर** के लिए इब्रानी शब्द (נָגַשׁ, *नागाश)* उन स्थितियों के लिए प्रयोग किया जाता है जहाँ अभियोगी अपनी स्थिति को न्यायी के पास लेकर जाता है (उत्पत्ति 18:23; 44:18; निर्गमन 24:14)। संदर्भ सुझाव देता है कि उन्होंने मूसा के साथ व्यक्तिगत वार्तालाप किया। मूसा के समक्ष प्रस्तुत होने के पश्चात, जिसमें दोनों पक्षों के मध्य सहमति बन गई (32:16-27), वे सब मण्डली के पास लौट कर आए और इस्राएल के अन्य अगुवों

के साथ सहमति के विवरण को साझा किया (32:28-32)। यह पटकथा वृत्तान्त में दोहराए जाने को समझाती है।

रूबेनियों और गादियों ने कहा, **"हम अपने पशुओं के लिये यहीं भेड़शाला बनाएँगे, और अपने बाल-बच्चों के लिये यहीं नगर बसाएँगे।"** "भेड़शालाएं" पत्थर की दीवारों से बनाई जाती थीं और "पशुओं" को जंगली जानवरों तथा चोरों से सुरक्षित रखने के लिए होती थीं। बसाए हुए "नगर" भी "बाल-बच्चों" (१७, *टैप)* के लिए सुरक्षा प्रदान करते। यद्यपि यह शब्द सामान्यतः "बच्चों" के लिए प्रयोग होता है (NJPSV), इस संदर्भ में यह परिवार के सभी सदस्यों का सूचक हो सकता है। यहाँ पर NLT में "स्त्रियाँ और बच्चे" आया है, जबकि REB में "आश्रित" आया है। कथानक के आगे बढ़ने के साथ, सूची में "बाल-बच्चे" के साथ "स्त्रियाँ" भी आया है (32:26)।

आयत 17. परन्तु रूबेन और गाद के पुरुष **इस्राएलियों के आगे आगे हथियार-बन्द चलेंगे** जब तक कि वे परमेश्वर द्वारा उन्हें प्रतिज्ञात क्षेत्र पर विजयी न हो जाएँ। उनकी स्त्रियाँ और बच्चे पीछे रह जाएँगे, यरदन के पूर्व, उन **गढ़वाले नगरों** में जो उन्हें **इस देश के निवासियों** से सुरक्षित रखेंगे।

रुचिकर है कि रूबेनियों और गादियों ने न केवल यह प्रस्ताव रखा कि वे इस्राएलियों के साथ जाएंगे, वरन यह कि वे उनके "आगे आगे" जाएँगे, उनसे पहले, युद्ध में कनानियों का सामना करने वाले पहले सिपाही बनकर। जेकब मिल्ग्रोम ने ध्यान किया, "परिवारों और सामान के बिना, वे अन्य गोत्रों की अपेक्षा अधिक गतिशील थे और इसलिए वे कमांडो के समान कार्य कर सकते थे।"[4] इस प्रस्ताव के द्वारा इन लोगों ने अपनी निष्ठा और साहस को दिखाया, क्योंकि जो सिपाही युद्ध में सेना की अगुवाई करते हैं उनके मारे जाने या घायल होने की संभावना अधिक होती है। वे कायर नहीं थे जो युद्ध से बचना चाह रहे थे, वे उस देश में जिसे कब्ज़े में ले लिया गया था, अपने परिवारों को बसा देना चाहते थे।

आयतें 18, 19. जिन दो गोत्रों ने यह निवेदन किया, उन्होंने यह प्रतिज्ञा भी की, कि वे **तब तक हम अपने घरों को न लौटेंगे** जब तक कि शेष गोत्रों को **यरदन** के पश्चिम में उनका **भाग** नहीं मिल जाता। फिर उन्होंने मूसा को बताया कि वे कनान विजय से प्राप्त अपने **भाग** की अपेक्षा नहीं करते, और कहा कि, **"क्योंकि हमारा भाग यरदन के इसी पार पूरब की ओर मिला है।"**

किया गया अनुबंध (32:20-32)

[20]तब मूसा ने उनसे कहा, "यदि तुम ऐसा करो, अर्थात् यदि तुम यहोवा के आगे आगे युद्ध करने को हथियार बाँधो, [21]और हर एक हथियार-बन्द यरदन के पार तब तक चले, जब तक यहोवा अपने आगे से अपने शत्रुओं को न निकाले [22]और देश यहोवा के वश में न आए; तो उसके पीछे तुम यहाँ लौटोगे, और यहोवा के और इस्राएल के विषय निर्दोष ठहरोगे; और यह देश यहोवा के प्रति तुम्हारी निज भूमि ठहरेगा। [23]और यदि तुम ऐसा न करो, तो यहोवा के विरुद्ध पापी ठहरोगे; और

जान रखो कि तुम को तुम्हारा पाप लगेगा। 24तुम अपने बाल-बच्चों के लिये नगर बसाओ, और अपनी भेड़-बकरियों के लिये भेड़शाला बनाओ; और जो तुम्हारे मुँह से निकला है वही करो।" 25तब गादियों और रूबेनियों ने मूसा से कहा, "अपने प्रभु की आज्ञा के अनुसार तेरे दास करेंगे। 26हमारे बाल-बच्चे, स्त्रियाँ, भेड़-बकरी आदि, सब पशु तो यहीं गिलाद के नगरों में रहेंगे; 27परन्तु अपने प्रभु के कहे के अनुसार तेरे दास सब के सब युद्ध के लिये हथियार-बन्द यहोवा के आगे आगे लड़ने को पार जाएँगे।" 28तब मूसा ने उनके विषय में एलीआज़ार याजक, और नून के पुत्र यहोशू, और इस्राएलियों के गोत्रों के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों को यह आज्ञा दी, 29यदि सब गादी और रूबेनी पुरुष युद्ध के लिये हथियार-बन्द तुम्हारे संग यरदन पार जाएँ, और देश तुम्हारे वश में आ जाए, तो गिलाद देश उनकी निज भूमि होने को उन्हें देना। 30परन्तु यदि वे तुम्हारे संग हथियार-बन्द पार न जाएँ, तो उनकी निज भूमि तुम्हारे बीच कनान देश में ठहरे।" 31तब गादी और रूबेनी बोल उठे, "यहोवा ने जैसा तेरे दासों से कहलाया है वैसा ही हम करेंगे। 32हम हथियार-बन्द यहोवा के आगे आगे उस पार कनान देश में जाएँगे, परन्तु हमारी निज भूमि यरदन के इसी पार रहे।"

आयतें 20-22. मूसा ने उन दोनों गोत्रों के प्रस्ताव के स्वीकार कर लिया। वह सहमत हुआ कि, यदि उनके हथियार-बन्द पुरुष **यहोवा के आगे आगे यरदन के पार** चलेंगे और अपने भाइयों के साथ युद्ध करेंगे जब तक कि यहोवा अपने आगे से **अपने शत्रुओं को** देश से न निकाल दे, तो उनके द्वारा निवेदन किया हुआ देश उनका होगा। एक बार **देश वश में** हो जाएगा, तो दोनों गोत्रों के योद्धा **निर्दोष ठहरेंगे** और यरदन के पूर्व में अपने नए घर को लौट सकेंगे। मूसा ने कहा कि तब वह देश उनकी **निज भूमि ठहरेगा**।

आयत 23. यदि वे अपनी कही हुई बात को पूरा नहीं करेंगे, मूसा ने कहा, तो वे पापी ठहरेंगे। फिर उसने उनसे कहा "**और जान रखो कि तुम को तुम्हारा पाप लगेगा।**" अपने सारे जीवन भर, विशेषकर उन चालीस वर्षों में जब उसने इस्राएल की अगुवाई की, मूसा ने इस सिद्धान्त को कार्यकारी होते हुए देखा था। जो पाप करते हैं, देर-सवेर, अपने पाप के परिणाम भोगते हैं। इसके अतिरिक्त, पाप के परिणाम भुगतने में एक संचित किया हुआ बल होता है। जो बोते हैं वे अपने बोए हुए से कई गुना अधिक काटते हैं ("वे वायु बोते हैं, और वे बवण्डर लवेंगे"; होशे 8:7)।[5] वास्तव में "जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है" (इब्रा. 10:31)।

आयत 24. इस सचेत करने और इसके अतिरिक्त एक चेतावनी देने के लिए कि **जो तुम्हारे मुँह से निकला है वही करो** मूसा ने उनके प्रस्ताव को विश्वास के साथ स्वीकार कर लिया। उसने उन से कहा कि **नगर बसाओ** और देश में स्थापित हो जाओ।

आयतें 25-27. रूबेन और गाद के अगुवों ने मूसा की आज्ञा का पालन करने की स्वीकृति दी। ऐसा करके, और मूसा को **अपने प्रभु** और स्वयं को **तेरे दास**

कहकर, उन्होंने इस्राएल के अगुवे के प्रति योग्य आदर प्रदर्शित किया। उनके **बाल-बच्चे, स्त्रियाँ, भेड़-बकरी आदि, सब पशु तो यहीं गिलाद** के नगरों में रहेंगे और वे गोत्र **युद्ध के लिये हथियार-बन्द ... लड़ने को** पार जाएँगे। प्रत्यक्षतः उन्होंने भी, यदि वे अपना वचन तोड़ते तो इससे उनके ऊपर आने वाले परिणामों को स्वीकार कर लिया था।

आयत 28. मूसा ने अपने निर्णय को इस्राएल के अन्य अगुवों को बताया, जिनमें **एलीआज़ार याजक, और नून के पुत्र यहोशू, और इस्राएलियों के गोत्रों के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष** भी सम्मिलित थे। प्रतीत होता है कि वे इस समझौता वार्ता की बातों से अनभिज्ञ थे।

आयतें 29, 30. मूसा ने इन अगुवों पर इस अनुबंध की बातों को पूरा करवाने का उत्तरदायित्व सौंपा। क्योंकि शीघ्र ही उसका देहांत होना था और उसे उस देश में प्रवेश नहीं करना था, अब इन अगुवों को देखना था कि यह योजना पूरी की जाए। यदि **रूबेन** और **गाद** के योद्धा अपनी वाचा को पूरा करके अन्य योद्धाओं के **संग यरदन पार जाएँ** और लड़ें जब तक कि **देश तुम्हारे वश में आ जाए** तो अगुवों को सुनिश्चित करना था कि उनके गोत्रों को **गिलाद देश उनकी निज भूमि होने को उन्हें दिया जाए**। यदि वे कनान को विजय करने में सहायता करने की अपनी वाचा को पूरा नहीं करते और उनके **संग हथियार-बन्द पार न जाएँ** तो यह अनुबंध निष्क्रिय हो जाएगा। तब उन्हें यरदन के पूर्व में बसने की अनुमति नहीं होगी और उन्हें **उनकी निज भूमि तुम्हारे बीच कनान देश में** खोजनी होगी।

आयतें 31, 32. तब गादी और रूबेनी बोल उठे और उन्होंने इन अगुवों के सामने इस अनुबंध के लिए अपनी आधिकारिक स्वीकृति दी। उन्होंने अनुबंध की बातों को दोहराने के द्वारा उसे निश्चित कर दिया: **"हम हथियार-बन्द यहोवा के आगे आगे उस पार कनान देश में जाएँगे, परन्तु हमारी निज भूमि यरदन के इसी पार रहे।"** इन गोत्रों को यहोशू की पुस्तक में अपनी वाचा को पूरा करते हुए चित्रित किया गया है "और रूबेनी, गादी इस्राएलियों के आगे पांति बान्धे हुए पार गए (यहोशू 4:12); उसके बाद वे घर को लौट गए (यहोशू 22:9)।"[6]

देश का आवंटन (32:33-42)

[33]तब मूसा ने गादियों और रूबेनियों को, और यूसुफ के पुत्र मनश्शे के आधे गोत्रियों को एमोरियों के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग, दोनों के राज्यों का देश, नगरों, और उनके आसपास की भूमि समेत दे दिया। [34]तब गादियों ने दीबोन, अतारोत, अरोएर, [35]अत्रौत, शोपान, याजेर, योगबहा, [36]बेतनिम्रा, और बेथारान नामक नगरों को दृढ़ किया, और उनमें भेड़-बकरियों के लिये भेड़शाला बनाए। [37]और रूबेनियों ने हेशबोन, एलाले, और किर्यातैम को, [38]फिर नबो और बालमोन के नाम बदलकर उनको, और सिबमा को दृढ़ किया; और उन्होंने अपने दृढ़ किए हुए नगरों के और और नाम रखे। [39]और मनश्शे के पुत्र माकीर के वंशवालों ने गिलाद देश में जाकर उसे ले लिया, और जो एमोरी उसमें रहते थे उनको निकाल

दिया। [40]तब मूसा ने मनश्शे के पुत्र माकीर के वंश को गिलाद दे दिया, और वे उसमें रहने लगे। [41]और मनश्शेई याईर ने जाकर गिलाद की कितनी बस्तियाँ ले लीं, और उनके नाम हव्वोत्याईर रखे। [42]और नोबह ने जाकर गाँवों समेत कनात को ले लिया, और उसका नाम अपने नाम पर नोबह रखा।

आयत 33. इसके बाद **मूसा ने** दोनों गोत्रों को (और **मनश्शे के आधे गोत्रियों को**) वह देश दे दिया जिसका उन्होंने अनुरोध किया था, **सीहोन** और **ओग** से लिया गया देश। यहाँ पर पहली बार "मनश्शे के आधे गोत्रियों" का उल्लेख आया है। प्रतीत होता है कि मनश्शे के लोग **रूबेन** और **गाद** के साथ हुई समझौता वार्ता में, जिसका विवरण अध्याय में पहले दिया जा चुका है, सम्मिलित नहीं थे। उन्होंने भी यरदन के पूर्व में बस जाने में कोई लाभ देखा होगा। यह कथन कि उन्होंने उस क्षेत्र को जीता था जिसमें वे बस गए (32:39) - जिसके परिणामस्वरूप "तब मूसा ने मनश्शे के पुत्र माकीर के वंश को गिलाद दे दिया" (32:40) - यह सुझाव देता है कि मनश्शे के लोगों को **नगरों, और उनके आसपास की भूमि समेत दे दिया** गया क्योंकि उन्होंने उसे जीता था। उन क्षेत्रों का, जिन्हें उन्होंने मूसा के नेतृत्व में जीता था, वर्णन यहोशू 13:8-12 में दिया गया है।

आयतें 34-36. यरदन के पूर्व में किस गोत्र को कौन सा क्षेत्र दिया गया इसका कुछ ब्यौरा दिया गया है। हम पढ़ते हैं कि **गादियों ने** आठ **नगरों को दृढ़ किया, और उनमें भेड़-बकरियों के लिये भेड़शाला बनाए**। इस संदर्भ में शब्द **बनाए** का अर्थ है नगरों का पुनः निर्माण या उनको सुदृढ़ करना। यहाँ दिए गए आठ नगरों में से चार वही हैं जिनके लिए आयत 3 में निवेदन किया गया था: **दीबोन, अतारोत**[7], **याजेर**, **बेतनिम्रा** (निमरा)।

आयतें 37, 38. छः नगरों को रूबेनियों ने दृढ़ किया। इनमें से पाँच संभवतः वही हैं जिनका निवेदन आयत 3 में किया गया था: **हेशबोन, एलाले**, **नबो और बालमोन** (बेओन) **और सिबमा** (सेबम)। लेख कहता है कि "नबो" और "बालमोन" का उल्लेख करने के बाद उन **के नाम बदल** दिए गए: **उन्होंने अपने दृढ़ किए हुए नगरों के और और नाम रखे।** नाम बदलने के पीछे कारण यह था कि "नबो" ("नाबू") और "बाल" झूठे देवताओं के नाम थे। नगरों के नाम बदलना इतिहास का एक नया अध्याय था, क्योंकि देश अब यहोवा के लोगों का हो गया था।

आयतें 39-42. तब मूसा ने मनश्शे के लोगों को **गिलाद दे दिया**, और उन्होंने **जो एमोरी उसमें रहते थे उनको निकाल दिया। मनश्शे के पुत्र माकीर** ने **गिलाद** को बसा दिया। **याईर ने ... कितनी बस्तियाँ ले लीं, और उनके नाम हव्वोत्याईर रखे। ... नोबह ने जाकर गाँवों समेत कनात को ले लिया**, और उसका नाम **अपने नाम पर ... रखा।**

इन सभी नगरों का सटीक स्थान और 2½ गोत्रों के क्षेत्र एक दूसरे के साथ किस प्रकार से संबंधित थे, यह तो स्पष्ट नहीं है।[8] यहोशू 13:15-33 के अनुसार रूबेन दक्षिण में जाकर बस गया, और गाद उत्तर में था, और मनश्शे और उत्तर में बाशान में था।

अनुप्रयोग

"जान रखो कि तुम को तुम्हारा पाप लगेगा" (32:23)

टेक्सस के ट्रेंट नगर में, जहाँ मैं रहता हूँ, दो नकाब लगाए हुए पुरुषों ने बैंक में डाका डाला। निःसंदेह, उन्होंने सोचा होगा कि चेहरों को छुपा लेने के कारण वे पकड़े नहीं जाएँगे और अपराध के लिए दोषी नहीं ठहरेंगे।

वे बैंक में डाका डालने वाले अन्य अनेकों के साथ यह विचार रखते हैं कि यदि वे अपनी गलती को छिपाए रखेंगे तो उसके लिए कभी उत्तरदायी भी नहीं ठहराए जाएँगे। इस विचार के कारण बैंक लूटने वाले नकाब पहनते हैं, दुकान से सामान उठाने वाले चोरी करने से पहले प्रतीक्षा करते हैं कि कब कोई चोरी करते हुए उन्हें देख नहीं रहा हो, और घरों में चोरी के लिए घुसाने वाले घर में किसी के न होने की प्रतीक्षा करते हैं। इसी प्रकार, जो व्यभिचार करते हैं वे अन्धकार में मिलने की प्रवृत्ति रखते हैं।

क्या पाप के परिणामों से बचने के ऐसे प्रयास सफल हो सकते हैं? हमारा लेख कहता है "जान रखो कि तुम को तुम्हारा पाप लगेगा" (32:23)। नए नियम में भी हम एक ऐसे ही सन्देश को देखते हैं: "मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।" (गला. 6:7)। ये खण्ड एक ऐसे सिद्धान्त को सिखाते हैं जो सदा ही सत्य रहा है।

कहा गया सिद्धान्त, मूल संदर्भ में। गिनती 32 बताती है कि रूबेन और गाद के गोत्रों ने यरदन के पूर्व की ओर के देश में बसने की अनुमति चाही - देश जिसे इस्राएली पहले ही जीत चुके थे (32:1-4)।

इस निवेदन से मूसा विचलित हुआ, उसने उन्हें "इस्राएलियों को अस्वीकार करवाने वाले" समझा (32:7)। उसे लगा कि वे यरदन पार करके वाचा के देश को जीतने जाना वैसे ही अस्वीकार कर रहे हैं, जैसे पिछली पीढ़ी ने किया था। उसे भय था कि ऐसा करने से इस्राएल का नाश होगा (32:6-15)।

दोनों गोत्रों ने (मनश्शे का आधा गोत्र बाद में उनके साथ सम्मिलित हुआ) एक प्रतिज्ञा के द्वारा प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि यदि मूसा उन्हें यरदन के पूर्व में उन का उत्तराधिकार देगा, - तो वे अपने स्त्रियों, बच्चों और पशुओं को वहाँ बसा देंगे परन्तु उनके योद्धा यरदन पार जाएँगे और शेष इस्राएलियों के साथ मिलकर युद्ध लड़ेंगे। वे तब तक लड़ेंगे जब तक कनान का सारा देश जीत नहीं लिया जाता है, और तब ही वे वापस अपने परिवारों को लौटेंगे (32:16-19)।

मूसा ने यह प्रबंध स्वीकार कर लिया, परन्तु उनके द्वारा वचन के पालन न करने के विरुद्ध चेतावनी दी। उसने कहा, "और यदि तुम ऐसा न करो, तो यहोवा के विरुद्ध पापी ठहरोगे; और जान रखो कि तुम को तुम्हारा पाप लगेगा" (32:23)। मूसा ने उनके अनुबंध को एक व्यापक संदर्भ में रखा। यह केवल दो समूहों, पूर्व की ओर के गोत्रों तथा पश्चिम की ओर के गोत्रों, के मध्य नहीं था। इसमें एक तीसरा पक्ष भी सम्मिलित था: परमेश्वर! यदि वे दोनों गोत्र अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने में असफल रहते, तो वे परमेश्वर के विरुद्ध पाप करते - और उन्हें पाप का दण्ड

मिलता। अच्छा समाचार यह है कि उन गोत्रों ने अपनी कही बात को पूरा किया (यहोशू 4:12, 13; 22:1-4)।

जब उसने मूसा के माध्यम से कहा कि, "जान रखो कि तुम को तुम्हारा पाप लगेगा" (32:23), तब परमेश्वर का अभिप्राय क्या था? एक व्याख्याकर्ता ने लिखा,

> मूसा ने यह नहीं कहा कि परमेश्वर सीधे से उन्हें दण्ड दे देगा। परन्तु, उसने कहा कि उनका पाप ... वह ही उन्हें ढूँढ़ लेगा। दूसरे शब्दों में, वह पाप, दुष्परिणामों के साथ, उन्हें परेशान करने के लिए अनिवार्य रूप से पलट कर आएगा। बाइबल में यह प्रमुख विषय बहुधा इस रूपक अलंकार द्वारा व्यक्त किया जाता है कि बुरे काम उन्हें करने वालों के सिर पर ही आ पड़ते हैं।[9]

हम यह कह सकते हैं कि पापी जन की प्रवृत्ति होती है कि अपने पाप को छिपाए, परन्तु पाप का स्वभाव होता है कि अपने आप को प्रकट कर दे। यह खण्ड इस बात पर बल देता है कि पाप के परिणाम होते हैं। पापी चाहे जो कर ले, वह छिपाने के कैसे भी प्रयास कर ले, पाप दुष्परिणाम लेकर अवश्य ही आता है।

सिद्धान्त का पुराने नियम में चित्रण। पुराने नियम में इस सत्य को चित्रित करने के लिए उदाहरण हैं। (1) आदम और हव्वा ने पाप करने के बाद परमेश्वर से छिपाने का प्रयास किया, परन्तु अपनी गलती के परिणामों से बच पाने में असफल रहे (उत्पत्ति 3)। (2) कैन ने हाबिल को मार डालने के तथ्य को छिपाने का प्रयास किया; परन्तु परमेश्वर ने कहा, "तेरे भाई का लहू भूमि में से मेरी ओर चिल्ला कर मेरी दोहाई दे रहा है" (उत्पत्ति 4:10)। (3) जब इस्राएल ने यरीहो पर विजय पाई तब आकान ने कुछ वस्तुएँ ले लीं जो "निषेध के अन्तर्गत" थीं और उन्हें अपने तम्बू में छुपा दिया, परन्तु वह पकड़ा गया और उसका अन्त मृत्यु हुआ (यहोशू 7)। (4) दाऊद ने बतशेबा के साथ व्यभिचार किया और उसके पति को मरवा डाला जिससे कि उससे विवाह कर सके, परन्तु दाऊद का दोष प्रगट हो गया (2 शमूएल 11; 12)।

सिद्धान्त का नए नियम में चित्रण। नए नियम में भी हम एक उदाहरण देखते हैं कि पाप कैसे "तुम्हें ढूँढ़ लेगा।" हन्नायाह और सफीरा ने, देने के लिए वे जितना दिखा रहे थे, उससे कम दिया, किन्तु उनकी अपेक्षा थी कि बहुत देने के कारण उनकी प्रशंसा की जाएगी। परन्तु पतरस ने कहा कि उन्होंने पवित्र आत्मा से झूठ बोला है, और वे मर गए (प्रेरितों 5।

सिद्धांत का सत्य आज। यही सत्य आज भी लागू है: आप इस बात के प्रति निश्चित रह सकते हैं कि "आपका पाप आपको ढूँढ़ लेगा।" आपका पाप आपको अनेकों विधियों से ढूँढ़ सकता है। (1) आप उन्हें चाहे जितना भी छिपाने के प्रयास करें, किन्तु संभावना यही है कि आपके पापमय कार्य प्रकट हो ही जाएँगे। (2) संभावना यह है कि आपके पापों के नकारात्मक भौतिक, परिणाम होंगे। (3) आपके पापों के निश्चय ही आत्मिक परिणाम होंगे, क्योंकि पाप पापी को परमेश्वर से पृथक कर देता है। (4) आपके पाप के, यदि आप उनके लिए पश्चाताप नहीं करते हैं तो, अनंतकालीन परिणाम होंगे।

उपसंहार। पाप के परिणाम निश्चित हैं, जब तक कि - और हम परमेश्वर का इस अपवाद के लिए धन्यवाद करें - हम यीशु को उन पापों को उठा ले जाने की अनुमति देते हैं! आप ऐसा प्रभु की ओर मुड़ कर और क्षमा प्राप्त करने के लिए जो उसने कहा है उसे करने के द्वारा कर सकते हैं।

ट्रेंट के उन बैंक लुटेरों का क्या हुआ? मैंने यह समाचार कभी नहीं सुना कि उन्हें पकड़ लिया गया। वे पुलिस द्वारा पकड़े जाकर जेल में डाले गए हों या नहीं डाले गए हों, एक है जो निश्चय ही जानता है कि वे कौन हैं और कहाँ हैं। अन्ततः वह उन्हें उत्तरदायी ठहराएगा। यद्यपि कुछ लोग हैं जो इस जीवन में अपनी गलतियों के लिए कभी उत्तरदायी नहीं होते हैं, परन्तु "उनका पाप उन्हें ढूँढ़ लेगा"; और वे न्याय के दिन उसके लिए अपना उत्तर देंगे!

"एकता द्वारा हम खड़े रहेंगे, विभाजित होने से गिर जाएँगे" (अध्याय 32)

जब रूबेन और गाद के गोत्रों ने यरदन के पूर्व के देश को माँगा तो मूसा चिन्तित हुआ क्योंकि उसे भय था कि इन दो गोत्रों के कार्य के कारण सभी लोगों को दुःख उठाना पड़ेगा। उसे लगा कि उनका बारह-गोत्रों के संघ को छोड़कर उससे बाहर निकलना पूरे राष्ट्र के पतन का कारण बन जाएगा। उसे प्रतीत हुआ, इस्राएल की एकता खतरे में थी। फिलिप जे. बड ने अध्याय 32 की परिस्थिति को आज की कलीसिया पर लागू किया: "एक सामान्य पहचान और एक ही उद्देश्य की समझ के बिना परमेश्वर के राज्य के प्रतिनिधियों के कार्य छितरे हुए और प्रभावहीन हो जाने की संभावना रखते हैं।"[10]

शेष राष्ट्र और उन 2½ गोत्रों के मध्य हुए अनुबंध से हमें संकेत मिल सकते हैं कि आज परमेश्वर के लोग एकता से कैसे रह सकते हैं। किसी भी विवाद में पड़े हुए पक्षों को सबसे पहले उस एकता को बनाए रखने के लिए परमेश्वर जिसका इच्छुक है, समस्त देह को सर्वोपरि रखना चाहिए (उदाहरण के लिए देखिए रोम. 14)।

समाप्ति नोट

[1]गॉर्डन जे. वेनहैम, *गिनती*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 213-14. [2]इन नगरों के स्थानों के विषय और जानकारी प्राप्त करने के लिए देखिए आर. डेनिस कोले, "नम्बर्स," इन *ज़ोंडर्वन इलस्ट्रेटेड बाइबल बैकग्राउन्ड्स कॉमेन्टरी*, वॉल्यूम 1, *उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण*, एड. जॉन एच. वाल्टन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन, 2009), 394. [3]इससे पूर्व के वृत्तान्त में इस स्थान के केवल कादेश कहा गया है (13:26; 20:1; 27:14); यहाँ इस इसके पूरे नाम "कादेशबर्ने" लिया गया है (देखें व्यव. 1:19; 2:14; 9:23)। [4]जेकब मिलग्रोम, *गिनती*, द जेपीएस टोराह कॉमेंट्री (फिलेडेल्फिया: ज्यूइश पब्लिकेशन सोसायटी, 1989), 270. [5]आर. के. हैरिसन, *गिनती: एन एक्सेजेटिकल कमेंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1992), 398. [6]रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, द NIV एप्लिकेशन कमेन्ट्री (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 2004), 513. [7]पवित्रशास्त्र के बाहर, मोआबी पत्थर (पंक्ति 10) इस बात की पुष्टि करता है कि गाद के लोगों ने अतारोत को जीता था। गिनती 32 के कई और नगरों का उल्लेख इस लेख में आता है। (पैट्रिक डी. मिलर, "मोआबईट स्टोन," *द इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल एन्साइक्लोपीडिया*, रिव. एडिटर, सम्पादक ज्योफ्रे डब्ल्यू. ब्रोमिले में

[ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1986], 3:396.) [8]चर्चा को ए. नूरद्टज़ी, *गिनती*, ट्रान्स. एड वान डेर मास, बाइबल स्टूडेंट्स कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ॉनडरवैन पब्लिकेशन हाउस, 1983), 282-86. [9]गाने, 788. गाने ने लैव्यव्यवस्था 24:19; व्यवस्थाविवरण 19:19; न्यायियों 1:7; 9:53, 56, 57; 15:11; 1 शमूएल 25:39; 2 शमूएल 1:16; 1 राजा 2:32, 33, 44; 8:32; 2 इतिहास 6:23; ओबद्याह 15 को उद्दृत किया। [10]फिलिप जे. बड, *गिनती*, वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 5 (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1984), 347.